भारत सरकार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2680

04 अगस्त, 2026 को उत्तरार्थ

विषय- गन्ने की फसल में कीट नियंत्रण

†2680. श्री चंदन चौहानः

क्या **कृषि और किसान कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार इस बात से अवगत है कि उत्तर प्रदेश के बिजनौर सहित विभिन्न गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में टॉप बोरर, स्मट रोग तथा अन्य कीटों एवं रोगों के कारण किसानों की उत्पादकता प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो रही है;

(ख) गत पाँच वर्षों के दौरान गन्ने की फसल को प्रभावित करने वाले विभिन्न कीटों एवं रोगों की रोकथाम, रोग-प्रतिरोधी किस्मों के विकास तथा आधुनिक नियंत्रण तकनीकों के संबंध में संचालित अनुसंधानों, परीक्षणों एवं परियोजनाओं के नाम क्या हैं तथा इनके प्रमुख परिणाम क्या रहे हैं;

(ग) क्या सरकार फसल क्षति की स्थिति में प्रभावित किसानों को समय पर वैज्ञानिक परामर्श, गुणवत्तायुक्त बीज, कीट एवं रोग प्रबंधन तथा फसल बीमा अथवा अन्य योजनाओं के माध्यम से वित्तीय सहायता/मुआवजा उपलब्ध कराने की कोई व्यवस्था कर रही है; और

(घ) बिजनौर सहित गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में कीटों एवं रोगों से होने वाली क्षति को स्थायी रूप से कम करने के लिए सरकार की भावी कार्य-योजना क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री रामनाथ ठाकुर)

(क**):** उत्तर प्रदेश राज्य में गन्ने का उत्पादन वर्ष 2023-24 में 2158.10 लाख मीट्रिक टन (एमटी) से बढ़कर वर्ष 2025-26 (तीसरा अग्रिम अनुमान) में 2296.99 लाख मीट्रिक टन हो गया है । इसी प्रकार, उत्तर प्रदेश में उपज वर्ष 2023-2024 में 81.34 मीट्रिक टन/हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2025-26 में 81.97 मीट्रिक टन/हेक्टेयर हो गई है (वर्षवार विवरण **अनुबंध I** में दिया गया है) ।

(ख): आईसीएआर-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईएसआरआई), लखनऊ, देश भर में गन्ने को प्रभावित करने वाले प्रमुख कीटों और रोगों की रोकथाम और प्रबंधन के लिए अनुसंधान, फील्डट्रायल- और प्रौद्योगिकी विकास में सक्रिय रूप से कार्यरत है। वर्तमान में, संस्थान 15 संस्थान-वित्तपोषित अनुसंधान परियोजनाएं, 4 बाह्य रूप से वित्तपोषित अनुसंधान परियोजनाएं और 9 संविदा अनुसंधान परियोजनाओं (विवरण **अनुबंध II** में दिया गया है) का कार्यान्वयन रहा है, जो रोग निदान(डायग्नॉसिस) , होस्ट रेसिस्टेंस, एकीकृत कीट और रोग प्रबंधन, बायोलॉजिकल नियंत्रण और जलवायु-अनुकूल फसल संरक्षण कार्यनीतियों सहित गन्ने के कीट और रोग प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को शामिल करती हैं।

यह संस्थान बायोकंट्रोल- प्रौद्योगिकियों के विकास और प्रसार के माध्यम से पर्यावरण अनुकूल फसल संरक्षण को भी बढ़ावा देता है। अनुशंसित बायोकंट्रोल- एजेंटों का समय पर प्रयोग, अन्य अनुशंसित फसल प्रबंधन पद्धतियों के साथ मिलकर, कीटों और रोगों के प्रकोप को काफी मात्रा में कम करता है, फसल के स्वास्थ्य और उत्पादकता को बढ़ाता है, रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता को कम करता है और पर्यावरण के अनुकूल गन्ने की खेती में योगदान देता है।

राज्य सरकार द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, विगत पांच वर्षों के दौरान उत्तर प्रदेश राज्य के लिए गन्ने की कई किस्में जारी/अपनाई गई हैं। इनमें से जल्दी पकने वाली गन्ने की किस्में जैसे सीओएसएच-19231, सीओएसएच-17451, सीओएसएच-18231, सीओएलके-16202, सीओएलके-15466 और सीओ-15023, साथ ही मध्यम और देर से पकने वाली गन्ने की किस्में जिनमें सीओएसएच-16233, सीओएसएच-15233, सीओएलके-16470, सीओएलके-15206, सीओएलके-14204 और सीओएलके-15207 शामिल हैं, जिन्हें राज्य के किसान गन्ने की खेती के लिए उपयोग कर रहे हैं।

(ग): राज्य सरकार द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, उत्तर प्रदेश गन्ना विकास विभाग और उत्तर प्रदेश गन्ना अनुसंधान परिषद, शाहजहांपुर के माध्यम से राज्य सरकार द्वारा समय पर वैज्ञानिक एडवाईज़री जारी की जाती है। इसके अतिरिक्त, त्रिस्तरीय बीज उत्पादन प्रणाली के माध्यम से किसानों को स्वस्थ और उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है। उत्तर प्रदेश गन्ना अनुसंधान परिषद, शाहजहांपुर के निर्देशन और पर्यवेक्षण में विभिन्न अनुसंधान केंद्रों, संस्थानों और चीनी मिल फार्मों में ब्रीडर बीजों का उत्पादन किया जाता है। इन बीजों को उत्तर प्रदेश गन्ना आयुक्त के आवंटन आदेशों के अनुसार विभिन्न जिलों में वितरित किया जाता है।

आईसीएआर-आईएसआरआई नियमित रूप से किसानों के खेतों के साथ-साथ चीनी मिलों के कमांड क्षेत्रों में भी सर्वेक्षण और निगरानी कर रहे हैं ताकि गन्ने में कीटों और रोगों के प्रकोप और गंभीरता की निगरानी की जा सके। पर्यावरण के अनुकूल रोग और कीट प्रबंधन पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी) कार्यक्रम के तहत किसानों को बायोकंट्रोल- एजेंट वितरित किए जा रहे हैं। किसानों को कीटों और रोगों के प्रभावी प्रबंधन के लिए अनुशंसित कीटनाशकों और फफूंदनाशकों के समय पर और आवश्यकतानुसार उपयोग के बारे में नियमित रूप से सलाह दी जाती है। इसके अतिरिक्त, तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम, किसान जागरूकता सत्र, विस्तार साहित्य (लीफलेट और तकनीकी बुलेटिन) का वितरण, वैज्ञानिक एडवाईज़री, गुणवत्तापूर्ण बीज वितरण कार्यक्रम और किसान-वैज्ञानिक संवाद नियमित रूप से आयोजित किए जा रहे हैं। कृषि से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी भी किसानों तक पहुंचाई जा रही है। इन विस्तार गतिविधियों का उद्देश्य किसानों की जागरूकता बढ़ाना, एकीकृत कीट और रोग प्रबंधन के बारे में उनके ज्ञान को सुदृढ़ करना और गन्ने की खेती की उत्पादकता और स्थिरता में सुधार करना है।

इसके अतिरिक्त, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, अपने क्षेत्रीय केंद्रीय एकीकृत कीट प्रबंधन केंद्र (आरसीआईपीएमसी) ,लखनऊ और उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, आगरा और वाराणसी, में स्थित तीन केंद्रीय एकीकृत कीट प्रबंधन केंद्र) सीआईपीएमसी(नियमित रूप से कीट निगरानी करते हैं और किसान फील्ड स्कूल, सीजन लॉन्ग ट्रेनिंग प्रोग्राम और ओरिएंटेशन प्रोग्राम जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) जानकारी का प्रसार करते हैं। कुल 35 सर्वेक्षणों में उत्तर प्रदेश में बिजनौर सहित 4906 हेक्टेयर क्षेत्र में सितंबर 2023 से मार्च 2026 की अवधि के लिए गन्ने की फसल के लिए सर्वेक्षण किए गए हैं। इसके अलावा, सितंबर 2024 से मार्च 2026 के दौरान गन्ने की फसल में कीटों और रोगों के प्रबंधन के लिए 105 एडवाईज़री जारी की गई हैं, और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बिजनौर सहित गन्ने की फसल में कीटों और रोगों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए 26 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिनमें 517 किसानों, राज्य विभाग के अधिकारियों और कृषि-इनपुट डीलरों को प्रशिक्षित किया गया है।

उत्तर प्रदेश राज्य, खरीफ वर्ष 2016 से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना (आरडब्ल्यूबीसीआईएस) का कार्यान्वयन कर रहा है। योजना के अंतर्गत फसल को अधिसूचित करना राज्य सरकार का विशेषाधिकार है। गन्ना इस योजना के अंतर्गत कवरेज के लिए पात्र है, लेकिन वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार ने पीएमएफबीवाई/आरडब्ल्यूबीसीआईएस के तहत गन्ने की अधिसूचना जारी नहीं की है।

(घ)**:** आईसीएआर-आईएसआरआई गन्ने में कीटों और रोगों के सतत प्रबंधन के लिए एक एकीकृत कार्यनीति का कार्यान्वयन और सुदृढ़ कर रहा है। भविष्य की कार्य योजना में उभरते कीटों और रोगों के प्रकोप का समय पर पता लगाने के लिए निरंतर निगरानी और प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, प्रतिरोधी और उच्च उपज देने वाली गन्ने की किस्मों का विकास, मूल्यांकन और प्रचार, सीड-मल्टिप्लिकेशनकार्यक्रमों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण रोगमुक्त रोपण बीजों का उत्पादन और वितरण; सांस्कृतिक, जैविक, यांत्रिक और आवश्यकता-आधारित रासायनिक नियंत्रण उपायों को एकीकृत करते हुए एकीकृत कीट और रोग प्रबंधन पद्धतियों को बढ़ावा देना; बायोकंट्रोल- एजेंटों और अन्य जैव-इनपुट का बड़े पैमाने पर उत्पादन और क्षेत्र में अनुप्रयोग; डिजिटल प्लेटफार्मों और क्षेत्र-आधारित विस्तार प्रणालियों के माध्यम से निदान(डायग्नॉसिस) और परामर्श सेवाओं को सुदृढ़ करना; नियमित किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम, फ्रंटलाइन डेमॉन्सट्रेशन और जागरूकता अभियान संचालित करना; विस्तार कर्मियों और चीनी मिल के फील्ड स्टाफ की क्षमता निर्माण; और जलवायु-अनुकूल फसल प्रबंधन पद्धतियों को बढ़ावा देना शामिल है। ये उपाय देश के गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में, जिनमें उत्तर प्रदेश का बिजनौर जिला भी शामिल है, फसल के नुकसान को कम करने, गन्ने की उत्पादकता में सुधार करने, किसानों की आय बढ़ाने और गन्ने की सतत खेती सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कार्यान्वित किए जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सूचित किया गया है कि फिलहाल बिजनौर सहित राज्य के किसी भी गन्ना उत्पादक क्षेत्र में रोगों या कीटों का कोई गंभीर प्रभाव नहीं देखा गया है।

इसके अतिरिक्त, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग वर्ष 2014-15 से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एवं पोषण मिशन (एनएफएसएनएम) के तहत गन्ने की फसल के लिए सहायता प्रदान कर रहा है। इस योजना के अंतर्गत प्रदर्शन और प्रशिक्षण के माध्यम से प्रौद्योगिकी अंतरण पर बल दिया जा रहा है।

विगत तीन वर्षों के दौरान एनएफएसएनएम-गन्ना के तहत उत्तर प्रदेश को आवंटित राशि निम्नानुसार है:

(रुपये लाख में)

वर्ष	**कुल**	**केंद्रीय हिस्सा**	**राज्य का हिस्सा**
2023-24	575.57	345.34	230.23
2024-25	575.50	345.30	230.20
2025-26	109.00	65.40	43.60

अनुबंध-I

<u>उत्तर प्रदेश में गन्ने के उत्पादन और उपज का विवरण</u>

उत्पादन (लाख मीट्रिक टन में)

उत्पादन		
2023-24	**2024-25**	**2025-26**
2158.10	2208.01	2296.99

वर्ष 2025-26 के आंकड़े तीसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार हैं

हेक्टेयर मीट्रिक टन में उपज प्रति

उपज		
2023-24	**2024-25**	**2025-26**
81.34	81.16	81.97

अनुबंध II

आईसीएआर-आईएसआरआई, लखनऊ में गन्ने की फसल के कीटों और रोगों के विभिन्न पहलुओं पर चल रही अनुसंधान परियोजनाओं की सूची

क (संस्थान की अनुसंधान परियोजनाएँ:

1. भारत में गन्ने के कीटों और रोगों का सर्वेक्षण और निगरानी
2. गन्ने के जर्मप्लाज्म का रेडरॉट- और स्मट रोग के प्रति मूल्यांकन/जांच
3. गन्ने के पोक्का बोएंग रोग का प्रबंधन
4. गन्ने में विल्ट पैथोजेन की आईसोल्शन, पहचान और पैथोजेनिसिटी
5. उपोष्णकटिबंधीय भारत में गन्ने के येलो लीफ डिज़ीज पैथोजेन का लक्षण वर्णन
6. गन्ने में रोग और कीटों का कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित पता लगाना
7. उपोष्णकटिबंधीय भारत में उत्पादकता बढ़ाने के लिए गन्ने के वायरोम का अनावरण
8. उपोष्णकटिबंधीय भारत में गन्ने के रेडरॉट- पैथोजेन के रोगजनकता पैटर्न की मैपिंग और रोगजनकता हॉटस्पॉट की पहचान करना
9. उपोष्णकटिबंधीय गन्ने के लिए एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन
10. गन्ने की फसल के रोगों के सतत प्रबंधन के लिए जैव-नियंत्रण एजेंट-आधारित जैव-सूत्र का विकास और व्यावसायीकरण
11. *ट्राइकोग्रामा चिलोनिस* और *टेट्रास्टिचस हॉवर्डि* नामक बायोएजेंटों- का डिस्पर्सलहोस्ट , लोकेशन, काइरोमोनल प्रभाव और रिकवरी
12. गन्ने में लगने वाले व्हाइट ग्रब्स के विरुद्ध कीट रोगजनक नेमाटोड का उपयोग
13. गन्ने में लगने वाले व्हाइट ग्रब्स के प्रबंधन के लिए कीट एंट्मोपैथोजेनिक बैक्टीरिया का बायोप्रॉस्पेक्टिंग-
14. गन्ने में कटाई के बाद सुक्रोज के जैव-अपघटन से जुड़े जीवाणुओं की विविधता का विश्लेषण और प्रबंधन कार्यनीतियाँ
15. शुगरकेन बोरर की रियरिंग को आगे बढ़ाना और कीटों तथा उनके जैविक एजेंटों पर कीटनाशकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

ख (बाह्य रूप से वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं:

1. केवीके के माध्यम से नेटवर्क मोड में गन्ने के सेटों की मशीनीकृत प्राइमिंग तकनीक के साथ सेटलिंग नर्सरी की तैनाती
2. महाराष्ट्र में गन्ने के कीटों और रोगों के खिलाफ जैविक एजेंटों के बड़े पैमाने पर उत्पादन और गन्ना एवं चीनी उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी के प्रसार हेतु बायोकंट्रोल-प्रयोगशाला की स्थापना।
3. नेटवर्क परियोजना: भारत में गन्ने की खेती में जल उपयोग दक्षता में सुधार और जल की बचत करना

4. भारत में गन्ने के कई रोगों की प्रभावी निगरानी के लिए स्मार्टफोन आधारित डिजिटल सहायता प्रणाली का विकास।

ग (संविदा अनुसंधान परियोजनाएँ:

1. गन्ने में जटिल खरपतवारों के खिलाफ एक्लोनीफ 500 ग्राम/लीटर + डिफ्लुफेनिकन 100 ग्राम/लीटर एससी के अंकुरण से पहले और बाद के प्रयोग की बायोएफिकेसी और पादप विषाक्तता का मूल्यांकन और अगली फसल पर इसका प्रभाव
2. गन्ने की जटिल खरपतवारों के विरुद्ध जीपीएच 1020 की बायोएफिकेसी और फाइटोटॉक्सिसिटी का मूल्यांकन और अगली फसल पर इसका प्रभाव
3. गन्ने के कीटों और रोगों के विरुद्ध यूपीएफआई 116 नामक सेट ट्रीटमेंट उत्पाद की बायोएफिकेसी और फाइटोटॉक्सिसिटी का मूल्यांकन
4. गन्ने की फसल में अर्ली शूट बोरर और टॉप शूट बोरर कीटों के संक्रमण पर टेट्रानिलिपोर 200 जी/एल एससी (वायगो) की जैव प्रभावकारिता और पादप विषाक्तता का मूल्यांकन और प्राकृतिक एनमीज़ पर प्रभाव
5. गन्ने के कीटों के विरुद्ध एसिटामिप्रिड 25% + बाइफेनिथ्रिन 25% डब्ल्यूजी की जैव प्रभावकारिता और पौध विषाक्तता का मूल्यांकन तथा प्राकृतिक एनमीज़ पर प्रभाव
6. गन्ने के जटिल खरपतवारों और वनस्पतियों के विरुद्ध जीपीएच 3021 की बायोएफिकेसी और फाइटोटॉक्सिसिटी का मूल्यांकन तथा अगली फसल पर प्रभाव
7. गन्ने में अर्ली शूट बोरर और अर्ली शूट बोरर के नियंत्रण के लिए टेट्रानिलिप्रोले 200 जी/एल एससी (वायगो) का मूल्यांकन
8. गन्ने में टॉप बोरर और टर्माइट के विरुद्ध एफआईएन2203 की प्रभावकारिता
9. गन्ने में टॉप बोरर और टर्माइट के विरुद्ध एफआईएन2203 की प्रभावकारिता

*****